संस्मरण

हथेली पर बना चिन्ह

❑ विनोद जोशी

शिक्षक द्वारा बच्चों को स्कूल में दी जाने वाली यातनाओं की त्रासद स्मृतियां पीछा नहीं छोड़तीं । ये बच्चे के मन में भय और कमजोरी का लंबे समय जमे रहने वाला नकारात्मक भाव तो पैदा करती ही है, कई बार अपने जख्मों के निशान भी छोड़ जाती है। स्कूली यातना के ऐसे ही जख्म से यह संस्मरण है। शिक्षक की ट्यूशन-वृत्ति से इस प्रवृत्ति का संबंध भी यहां दिख रहा है ।

बात उन दिनों की है जब में चुरू जिले के एक छोटे से कस्बे में प्राथमिक स्कूल की कक्षा पांच में पढ़ता था । गांव में तीन सरकारी स्कूल थीं । प्राथमिक स्कूल जिसमें लड़के पढ़ते । दूसरी मिडिल स्कूल जिसमें सिर्फ लड़कियां पढ़तीं । तीसरी माध्यमिक स्कूल थी जिसमें लड़के लड़कियां (नवमीं कक्षा में) साथ-साथ पढ़ते ।

मैं पांचवी कक्षा में जिस स्कूल में पढ़ता, वहां के अध्यापक बच्चों को बहुत प्यार से पढ़ाते थे। वे हमें हमारे नाम से संबोधित कर बेटे-बेटे कहकर पुचकारते और पढ़ाते । परन्तु इस स्कूल के भवन की हालत काफी जीर्णशीर्ण थी । खासकर बरसात के महिनों में स्कूल भवन के ढह जाने की चिंता परिजनों के साथ-साथ अध्यापकों को भी रहती । स्कूल का भवन काफी पुराना था । इसका एक बड़ा हिस्सा चौड़ी दरार पड़ने के कारण मुख्य भवन से लगभग अलग सा हो गया था। भवन के अलग हो चुके इस भाग की कभी भी गिर जाने जैसे स्थिति थी।

इसी बीच बरसात का मौसम आ गया । बरसात के दिनों में अध्यापक गण हमें स्कूल के चौक में बिठाकर पढ़ाते । एक बार दो-तीन दिन तक रुक रुक कर बरसात होती रही । शाला भवन की स्थिति को देखते अध्यापकगण व गांव वालों ने मिलकर फैसला किया और स्कूल को अस्थायी तौर पर गांव की ही एक पुरानी धर्मशाला में चलाने का निर्णय किया। अगले दिन से हम बच्चे लोग उत्साह के साथ शाला के इस नये प्रांगण में घुल मिल गये । कमरों में प्रकाश आने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण अध्यापकगण हमें प्रांगण में उगे पेड़ों के नीचे पढ़ाते ।

इसी बीच पांचवी कक्षा की परीक्षा नजदीक आ गई । प्राथमिक स्कूल परिवार ने हमारी विदाई तिलक लगाकर की । हमें हमारे प्रिय गुरुजनों से दूर जाने का दुख तो था, पर साथ ही बड़े स्कूल (माध्यमिक विद्यालय को इसी नाम से जानते थे।) में जाने की खुशी भी थी । स्कूल का बड़ा भवन, खेल के मैदान, बैठने के लिए टेबिल कुर्सी तथा एक यूनिफार्म उत्सुकता के अन्य कारण थे ।

अपेक्षा के अनुरूप परीक्षाफल के बाद बड़े स्कूल में दाखिला मिल गया । कुछ ही दिनों में नया स्कूल भी पुराने की तरह ही लगने लगा । धीरे धीरे पढ़ाई प्रारंभ हो गई । छठी कक्षा से पहली बार 'अंग्रेजी' विषय से परिचित होना था। इस विषय के बारे में जिनसे सुना और समझा उससे मन के अन्दर इस विषय के प्रति डर बैठ गया। हमें हमारे 'कक्षा-अध्यापक' ने बता दिया था कि पहले वाले गुरूजी का तबादला अन्यत्र हो गया है। नये शीघ्र ही आने वाले हैं ।

एक दिन हैडमास्टर साहब एक अन्य अपरिचित व्यक्ति के साथ कक्षा में आये । उन्होंने बताया कि आप अंग्रेजी पढ़ाने वाले गुरूजी हैं । मास्टर जी की ऊंची कद काठी, लम्बी व घनी मूछें उनको पहलवान सरीखा बना रही थीं। उन्होंने एक हाथ में लोहे का मोटा कडा तथा अंगुली में बड़े नग की अंगूठी पहन रखी थी । हैडमास्टर जी के जाने के बाद अपने पहले परिचय में गुरूजी ने बताया वे अनुशासन प्रिय सख्त किस्म के शिक्षक हैं । जहां से वे तबादला होकर आये, वहां का उदाहरण देते हुए हमें बताया कि किस तरह उनके एक छात्र के सिर पर मुक्का मारने के कारण वह मरते मरते बचा । अंगूठी को दिखाते हुए उन्होंने बताया कि यह उसकी खोपड़ी में घुस गई थी ।

उनके इस पहले ही परिचय से हम सभी छात्र सकते में आ गये । मेरे मन में उनका डर घर कर गया । वे जब भी पढ़ाते, मेरा ध्यान पढ़ाई में कम उनकी अंगूठी पर ही अधिक रहता । इसी तरह चलते-चलते एक साल निकल गया।

मैंने अंग्रेजी के अलावा अन्य विषयों में अच्छे अंक प्राप्त किये । सातवीं कक्षा में अंग्रेजी के पहले पीरियड में गुरूजी ने मुझे कहा, ''इस बार तो जैसे तैसे पास कर दिया है लेकिन अब ऐसे नहीं चलेगा ।'' धीरे धीरे मुझे लगने लगा कि मैं अंग्रेजी विषय पास नहीं कर पाऊंगा ।

इसी बीच गुरूजी ने घर पर अंग्रेजी विषय की ट्यूशन देना

प्रारंभ किया। मेरे अधिकांश सहपाठी उनसे घर पर भी पढ़ने लगे। मैने भी अपने पिताजी से इस विषय में बात की । उन्होंने साफ मना कर दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल में ही ध्यान से पढ़ो, ताकि टयूशन की जरूरत ही न पड़े । लेकिन मैं पहले व दूसरे टेस्ट में अंग्रेजी में फेल हो गया । गुरूजी अब मुझसे बहुत खफा हो गये थे। मैं जब कभी हिम्मत करके कक्षा में उनसे पूछने का साहस कर भी लेता तो एक ही जवाब देते 'तेरी खोपड़ी में तो गोबर भरा है। तुम नहीं समझ सकते ।'' एक दिन गृह-कार्य में उन्होंने कुछ निश्चित पाठ तक के सभी शब्दों के अर्थ याद करने को दिये। अगले दिन उनको पूछना था। मैंने घर पर सभी शब्दार्थो को मय स्पेलिंग रटा । परन्तु कक्षा में गुरू जी के सामने जाते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सब कुछ भूल गया। उन्होंने मुझसे 'अम्ब्रेला' तथा 'एलिफेन्ट' शब्द की स्पेलिंग व अर्थ पूछा । एक तो मुझे उस समय ये दोनों शब्द सबसे कठिन लगते थे, मुझे लगा गुरूजी ने जानबूझ कर दोनों शब्द मेरे से ही पूछे । दूसरा भय के कारण मैं सहीं नहीं बता पाया । गुरूजी बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने मेरे एक सहपाठी को 'प्रयोगशाला' में रखा डंडा लाने को कहा ।

साथी तुरंत ही कुर्सी के हत्थे वाला बड़ा सा डंडा ले आया। गुरूजी ने दोनों हाथ आगे करने को कहा और तडातड मारने लगे। अचानक मुझे सीधे हाथ की हथेली पर ऐसा लगा जैसे अंगारा रख दिया हो । मैने उस हाथ की मुट्ठी बंद कर हाथ को पीठ के पीछे कर लिया। गुरूजी ने हाथ आगे बढ़ाने को कहने के लिए पैर के टखने पर चोट की । मुझे असहनीय पीडा हुई। मैंने रोते हुए हाथ आगे बढाया, मैने देखा मेरी मुट्ठी खून से भरी है। खून टपटप कर फर्श पर गिर रहा था। गुरूजी ने कड़ककर पूछा, हाथ मे कोई घाव या फोडा था क्या ? मैंने डरते हुए नहीं कहा । तब गुरूजी ने डंडे को सीधा करके देखा उसमें कील लगी हुई थी । तुरंत ही मुझे हेडमास्टर जी के कमरे में ले जाकर मरहम पट्टी की गई । उस घाव का निशान आज भी मेरी हथेली पर स्पष्ट है ।

इस घटना के बाद से मैं स्कूल जाने व पढ़ने से घबराने लगा। मैं घर पर स्कूल नहीं जाने के बहाने खोजने लगा। कई बार स्कूल से अंग्रेजी पीरियड से पहले कभी पेट दर्द तो कभी सर दर्द का बहाना बनाकर छुट्टी लेकर घर आ जाता । इसके कारण कक्षा में पढ़ाई में पिछड़ने लगा । गृह कार्य भी अधूरा रहता । उसको पूरा करने के लिए स्कूल के सहपाठियों से कापी मांगकर नकल करता। मैं मार की डर से घर पर हर वक्त अंग्रेजी पढ़ता । उसकी कहानियां, शब्दार्थ रटता । जैसे-तैसे आठवीं कक्षा पास की । इस बार अंग्रेजी के अलावा अन्य विषयों में भी नम्बर कम मिले । घरवालों के अलावा स्कूल के आम गुरूजनों ने भी नम्बर कम आने का कारण पूछा । मैं कुछ भी नहीं बता पाया । मुझे स्वयं को भी पता नहीं था कि ऐसा क्यों हो रहा है। अब मेरा मन पढ़ाई में नही लगता था। मन करता पिताजी के साथ दूकान पर बैठ जाऊं । पर घरवाले चाहते मैं पढूं । मेरा ध्यान अब खेलने में लगता ।

अचानक एक दिन मेरे एक सहपाठी ने स्कूल के बाहर खेल में हुई साधारण धक्का मुक्की की शिकायत अंग्रेजी वाले गुरूजी से कर दी । यह सहपाठी उनसे पिछले दो साल से घर पर टयूशन भी लेता था । अगले दिन सुबह की प्रार्थना सभा के बाद जब सभी छात्र अपनी अपनी कक्षाओं में जा रहे थे, तब मुझे गुरूजी ने रूकने को कहा । कडककर पूछा 'दादागिरी' करते हो । यकायक सिर के बाल पकडकर लगभग घसीटते हुए मुझे स्कूल के खुले प्रांगण तक ले गये। उस समय तक मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे किस बात का दंड दिया जा रहा है । थोड़ी ही देर में उन्होंने मेरी शिकायत करने वाले सहपाठी को बुलाया और पूछा क्या बात थी? सहपाठी ने एक साथ मुझ पर कई आरोप लगाये । गुरूजी बोले इसकी दादागिरी तो मैं आज उतार दूंगा । यह तेज गर्मी के दिन थे। उन्होंने मुझे नंगे पांव धूप में खड़ा होने का आदेश दिया । कुछ देर बाद उन्होंने मुझे कुर्सी बनने को कहा (कुर्सी बनना एक प्रकार का कठोर शारीरिक दंड है जिसमें दोनों घुटने आधे मोड़कर, हाथों को हवा में सीधे रखते हुए कुर्सी जैसे लगना होता है), इतना ही नहीं उन्होंने मेरे दोनों हाथों पर एक एक ईंट रखवा दी। इस बीच मैंने गुरूजी से काफी अनुनय विनय किया। गिड़गिड़ाया भी । पर उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी । मैंने उनको यह बताने का असफल प्रयास किया कि मेरे सहपाठी के आरोप सत्य नहीं हैं । ईंट गिरने या पांव सीधा होने पर वे डंडा मारते रहे । मेरा गर्मी, प्यास व दंड के भय से कलेजा फटा जा रहा था । सभी कक्षा के छात्र खिड़कियों से ताककर यह सब देखते रहे । कुछ राहगीर भी स्कूल के सामने रुक गये । बहुत देर के बाद मुझे ऐसा लगा मानो मुझे चक्कर आ रहे हैं । मेरी आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। उसके बाद का मुझे कुछ भी पता नहीं क्या हुआ।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको अस्पताल में पाया। मेरे चारों तरफ स्कूल के अध्यापकगण, छात्र, चिकित्साकर्मी गांव वाले व परिजन खड़े थे । हैडमास्टर जी ने मुझे पुचकारा, मैं उनसे लिपट कर जोर जोर से रोने लगा ।

मुझे मेरे परिजन जब अस्पताल से घर ले जा रहे थे । मैंने देखा स्कूल के बाहर गांव के लोगों व स्कूल के मेरे सहपाठियों का हुजूम खड़ा है । वे खड़े होकर अंग्रेजी के गुरूजी के खिलाफ रोषपूर्ण नारे लगा रहे थे। हेडमास्टर जी लोगों को हाथ जोड़कर विनम्रता से कुछ समझाने का प्रयास कर रहे थे । मुझे उस समय मेरे बचपन वाला टूटा फूटा स्कूल और प्यार से बेटे बेटे कहकर पुचकारने वाले अध्यापकगण याद आ रहे थे ।◆